बंदगी वाले खुदाए राखत, बलाए सेती सलामत।
कजाए का सिर लेओ हुकम, हक मिलावे को रूह तुम।। २३ ।।

ईमान से बन्दगी करने वाली आत्माओं को धाम धनी मेहरबानी करके दुनियां के कष्टों से बचाकर रखते हैं, इसलिए यदि तुम्हारी आतम श्री राजजी से मिलना चाहती हो तो इन्साफ की वाणी कुल्जम सरूप के अनुसार चलो।

दूर करो जो बिना हक, करो उस्तुवारी जो बुजरक।
लुत्फ मेहेरबानगी पाओ भेद, छूटो तिनसे जो है निखेद।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज के बिना माया की चीजों को छोड़ दो और दीन (धर्म), ध्यान, इश्क, प्रेम भाव के रास्ते पर दृढ़ता के साथ चलो। तब दुःखदायी माया से छूटकर तुम निर्मल हो जाओगे और तब श्री राजजी महाराज के दिल की बातों के गुझ (गुप्त) भेद उनकी मेहरबानी से जान सकोगे।

खुदाए बीच वजूद हिजाब, रूह तुमारी बैठा दाब।
पीछे फना के फायदा सब, दौलत खुदाए बका पाओ जब।। २५ ।।

तुम्हारे पांच तत्व के शरीर ने तुम्हारी आतम को दबा रखा है, इसलिए तुम्हारे और श्री राजजी महाराज के बीच में यह शरीर ही परदा बना है। श्री प्राणनाथजी के ऊपर अपने तन, मन, धन कुर्बान कर अपने अहंकार को मिटा दो। इसके बाद बहुत फायदा मिलने वाला है। तुम्हें धाम धनी के अखण्ड आनन्द की बेशुमार न्यामतें मिलेंगी।

बका चाहे सो फना होए, बिना फना बका न पावे कोए।
छोड़ो नाचीज जो कमतर, ताथें फना होउ बका पर।। २६ ।।

जो कोई परमधाम के अखण्ड सुखों को चाहने वाला हो, वह आखिरी जमाने के खाविंद के चरणों पर कुर्बान हो जाएं। बिना कुर्बानी के अखण्ड परमधाम के सुख किसी को नहीं मिल सकते, इसलिए नाचीज जो यह मोह माया है, इसको छोड़कर अखण्ड सुख के देने वाले इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों पर अपने अहंकार को मिटाकर कुर्बान हो जाओ।

ढांपे थे जो एते दिन, हनोज लों न खोले किन।
बातून जो कुरान के स्वाल, सो जाहेर किए छत्रसाल।। २७ ।।

छत्रसालजी कहते हैं कि जब रसूल साहब आए थे, तब से एक हजार वर्ष तक अर्थात् सम्वत् १७३५ तक कुरान के छिपे रहस्यों को किसी ने नहीं खोला और न कोई जान ही सका था। अब कुरान के बातूनी अर्थ आखिर जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी ने जाहिर कर दिए हैं।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। ७९ ।।

तीसरे सिपारे बड़ा जहूर, इमाम सुलतान का मजकूर।
महमूद गजनवी सुलतान, मिले इमाम सुख हुआ जहान।। १ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं कि कुरान के तीसरे सिपारे में इमाम और सुल्तान का एक किस्सा है। सुल्तान महमूद गजनवी को भी इमाम से मिलने की इच्छा हुई। जब इमाम मिल गए तो बादशाह और उसकी जनता को भी सुख मिला। जाहिरी लोग कहते हैं कि यह बीता हुआ किस्सा है, परन्तु यह तो आखिर में होने वाली घटना की जानकारी है। इस किस्से में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज हैं और महाराजा छत्रसाल के मिलने की जानकारी है।

Nijanand App

लागन हिंदू मुसलमान, गजनवी महमूद सुलतान।
ढ़ाए हिंदुओंके खाने बुत, दिलमें इमाम की ज्यारत।। २ ।।

हिन्दुस्तान में औरंगजेब के राज्य में हिन्दू-मुसलमान का युद्ध चल रहा था। औरंगजेब को मक्के मदीने से आए वसीयतनामों से पता चल गया कि इमाम मेंहेंदी हिंद में जाहिर हो गए, इसलिए इमाम मेंहेंदी को मिलने के लिए उसने साधु-सन्तों पर जुल्म ढाए। मन्दिरों और मूर्तियों को तोड़ा कि शायद कहीं मन्दिरों में इमाम मेंहेंदी हों, तो मिल जाएंगे।

अपने जमाने था उस्तुवार, कुतब औलियों का सिरदार।
बंदगी माहें था बड़ा, सफ तलेकी रेहेता खड़ा।। ३ ।।

औरंगजेब बादशाह अपने जमाने में सबसे बड़े कुरान के ज्ञानी थे। वह काजियों में सिरदार थे। इसको खुदा की बन्दगी से दृढ़ विश्वास था, इसलिए उनकी चाह में गरीबी से खड़ा रहता था।

तलब द्वा फातियाओं की कर, चाहता था तो अजमंतिसा अवसर।
फकीर सुलतानसों बातें भई, तब आकीन आया सही।। ४ ।।

अजमंतिसा कुरान की आयत में लिखा है कि खुदा सब प्रकार से समर्थ है। चाहे जिसको बादशाह बना दे, चाहे जिसको फकीर बना दे। उधर महाराजा छत्रसालजी बारह वर्ष पहले से ही बुधजी के आने की इन्तजार में थे, क्योंकि बारह वर्ष पहले उनको स्वामीजी ने पहचान के लिए अपना सिक्का दिया था। मऊ में तिदन्री दरवाजे पर मिलाप के समय बातें हुईं। तब महाराजा छत्रसाल को ऐसे और सिक्के देखने से और पक्का यकीन आ गया।

इमामें कह्या यों कर, पेसकसी ल्यावें हम घर।
बस्ती कोस पांच हजार, मुलक मदीने कई सेहेर बाजार।। ५ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने छत्रसाल से पूछा कि हमारे लिए तुम क्या नजराने (भेंट) लाए हो। महाराजा छत्रसालजी ने कहा कि बुन्देलखण्ड की पांच हजार कोस की बस्ती अर्थात् यह मेरा पांच तत्व का शरीर, गुण, अंग इन्द्रियों सहित आपकी सेवा में अर्पित है।

एक हजार सात सै हाथी, लाख घोड़े सूरमें साथी।
एती आएके पेसकसी करी, ओढ़के पुरानी कमरी।। ६ ।।

सत्रह सौ हाथी और एक लाख घोड़े (दस इन्द्रियां, पांच प्राण, अपान-ब्यान, समान-उदान बुद्धि और चित्त यह सत्रह तत्वों का शरीर है। यही सत्रह सौ हाथी हैं। मेरा मन जो एक पल में एक लाख घोड़े के समान दौड़ने की शक्ति रखता है) इन्हें आपके चरणों में भेंट करता हूं। गरीबी और अधीनी की पुरानी कमरी ओढ़कर आपकी सेवा में खड़ा हूं (यह सब कुछ चोपड़ाजी की हवेली में पहली आरती के समय न्यौछावर किया)।

आप होए के नंगे पाए, तलेकी सफ में खड़ा आए।
आजिज होए नमाया सीस, कहे मोको करो बकसीस।। ७ ।।

अपने राजपूती अभिमान को त्याग दिया। यही नंगे पांव होना है। सब सुन्दरसाथ के पीछे हाथ जोड़कर खड़े हो गए और बड़ी नम्रता से श्री प्राणनाथजी के सामने सिर झुकाया और प्रार्थना की कि मेरी भूलों को क्षमा कर जो चाहो बख्शीश करो।

Nijanand App

कहे मोको सबूरी देओ, फकीरों के मिलावे में लेओ।
दुनियां थें आजाद किया, फकीरों के मिलावे में लिया।। ८ ।।

महाराजा छत्रसालजी ने विनती की कि दुनियां के झंझटों से निकालकर मुझे अखण्ड परमधाम के सुख दीजिए और मोमिनों की जमात में मुझे शामिल कीजिए। तब श्री राजजी ने उन्हें माया के झंझटों से दूर करके सुन्दरसाथ में मिला लिया।

तो अजमंतिसा में सही, गजनवी को बकसीस भई।
इमाम पेहेचान करो रोसन, संसे भान देऊं सबन।। ९ ।।

महाराजा छत्रसालजी को अजमंतिसा आयत में लिखे अनुसार बारह हजार मोमिनों में अमीरूल मोमिन के खिताब से सिरदारी मिली। अब छत्रसाल जी कहते हैं कि इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी विराजमान हैं। इनकी पहचान मैं सबको कराऊंगा। दुनियां के जो लोग कहते हैं कि यह बीते किस्से हैं, उनके संशय मिटांऊगा। यह किस्सा बीती बात नहीं है। यह आखिरत के निशान हैं।

देऊं कुरानकी साहेद, बिना फुरमान न काढ़ों सब्द।
छठे सिपारेमें एह सनंध, ईसा नुसखेका खावंद।। १० ।।

महाराजा छत्रसाल जी कहते हैं कि मैं जो कहूंगा कुरान की गवाही देकर कहूंगा। कुरान के छठे सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी नुस्खा (तारतम ज्ञान) के मालिक हैं। उन्होंने माया से छुटकारा दिलाने के लिए तारतम ज्ञान रूपी औषधि पाई।

और साहेदी देऊं तीसरी, अहेल किताबें दिलमें धरी।
दस और एक सिपारा जित, एह सब्द लिखे हैं तित।। ११ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान की तीसरी गवाही देता हूं। ग्यारहवें सिपारे में लिखा है कि धर्मग्रन्थ के रहस्यों को जानने वाले मोमिन हैं। वह इन रहस्यों को सच्चाई से ग्रहण करते हैं।

बरस नव सै नब्बे हुए जब, मोमिन गाजी आए तब।
रूहअल्ला आए तिन मिसल, दूसरा जामा होसी मिल।। १२ ।।

रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष बीतने पर श्यामा महारानी रूहों को लेकर संसार में प्रगटे और दूसरे तन से श्री प्राणनाथजी के रूप में जाहिर हुए।

बंदगी ए करसी कबूल, एकको हजार देवें इन सूल।
ए दूजा जामा ईसेका होए, बातून माएने पाइए सोए।। १३ ।।

श्यामा महारानी अपने दूसरे तन (श्री प्राणनाथजी महाराज) से सबकी बन्दगी को स्वीकार करेंगे और एक बन्दगी के बदले हजार बन्दगियों का फल देने वाले होंगे। रूह अल्लाह का दूसरा जामा जो लिखा है उसकी पहचान जाहिरी अर्थों से नहीं होती है। बातूनी से होती है। श्री श्यामाजी महारानी श्री देवचन्द्रजी का तन छोड़कर श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठे, यही दूसरा जामा है।

चौथी साहेदी नामें नूर, हुआ रूहअल्ला का नुसखा जहूर।
नव सै नब्बे नव मास ऊपर, ए नुसखा लिया मिसल मातबर।। १४ ।।

पहली गवाही तीसरे सिपारे से, दूसरी गवाही छठे सिपारे से और तीसरी गवाही ग्यारहवें सिपारे की दी है। चौथी गवाही नूर-नामा किताब की है। उसमें लिखा है कि रसूल साहब के नौ सौ नब्बे वर्ष नौ महीने

Nijanand App

के बाद में श्री श्यामा महारानी रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी के तन में प्रगट हुईं और इन्हीं ने नुस्खे से मोमिनों की जमात में तारतम ज्ञान की रोशनी फैलाई।

असराफील इत बीच इमाम, ए नुसखे इलमकी किताबें कलाम।
एक रोज आए खाने किताब, कह्या पोहोंचाओ नुसखा सिताब।। १५ ।।

असराफील फरिश्ता ने यहां इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज के तन से कुलजम सरूप की वाणी जाहिर की। रामनगर की मंजिल में लालदासजी महाराज को औरंगजेब के पास जाने का हुकम हुआ था। तो उन्होंने लायब्रेरी (पुस्तकालय) में जाकर कुरान को देखकर श्री राजजी का हुकम निकाला, जिसमें सोलहवें सिपारे में लिखे मूसा, हारून और फिरऔन का किस्सा निकाला। उसे देखकर श्री प्राणनाथजी ने लालदासजी को कहा कि महाराजा छत्रसाल के पास तुरन्त समाचार पहुंचाओ।

महमूद गजनवी सुलतान, ओ नुसखा हासिल करे परवान।
जब नुसखा उनने सही किया, पंद्रा रोज सामें आएके लिया।। १६ ।।

स्वामीजी लालदासजी से कह रहे हैं कि कुरान में लिखे सुलतान गजनवी महाराजा छत्रसाल हैं। यह तारतम ज्ञान के नुस्खे को अवश्य लेंगे। उन्होंने लिया भी। उन्होंने अपने भतीजे देवकरण को पन्द्रह दिन पहले बुलाने भेज दिया और फिर मिलाप हुआ।

तब अव्वल आखिरकी मिली सब जहान, मिले तित हिंदू मुसलमान।
और भी मिली अनेक जात, सब कोई नुसखा करे विख्यात।। १७ ।।

श्री प्राणनाथजी महाराज के साथ देश-परदेश से आए हिन्दू-मुसलमान सुन्दरसाथ अव्वल के हैं। महाराजा छत्रसालजी और उनके साथ कई अनेक जातियों के लोगों ने श्री प्राणनाथजी महाराज से कुलजम सरूप की वाणी का प्रचार-प्रसार शुरू किया।

केतोंक अपना किया कुरबान, करें निछावर बुजरक जान।
इत पांच सै जुलजुलाटद्दू, संग रसूल के असलू रूह।। १८ ।।

कितने ही खासलखास मोमिनों ने अपने तन, मन, धन कुर्बान करके सेवा-बन्दगी का लाभ लिया। श्री प्राणनाथजी के साथ पन्नाजी में पांच सौ ब्रह्मसृष्टियां थीं।

ए बखत हुआ कही कयामत, दोस्त खाना दाना पोहोंची सरत।
गुनाह सुलतान के किए सब माफ, लिया नुसखा हुआ साफ।। १९ ।।

कुरान में ग्यारहवीं सदी में जो कयामत का दिन लिखा है, वह श्री प्राणनाथजी के जाहिर होने के लिए है। उनके द्वारा ही कयामत के सात बड़े निशान जाहिर हुए। श्री प्राणनाथजी महाराज के दोस्त जो मोमिन रूहें हैं, उनको कुलजम सरूप की वाणी से परमधाम का ज्ञान (आतम का आहार) मिला। महाराजा छत्रसालजी के मिलने से पहले अनजाने में जो भी गुनाह हुए थे, वह सब श्री प्राणनाथजी ने माफ कर दिए। वह कुलजम सरूप की वाणी से निर्मल हो गए।

बारे हलके थे जो बंध, किए आजाद छूटे माया फंद।
लाख नंगों के दिए सिरो पाए, हुआ सुख दुख सबों जाए।। २० ।।

बारह हजार मोमिनों को त्रिगुण की माया के फन्दे से आजाद किया (त्रिगुण फांस के फन्द पड़े थे सो फन्दा निरवारे)। इन मोमिनों को पाक करके लाखों नगों से जड़ित सम्पत्ति परमधाम की बख्शीश में दी, जिससे मोमिनों के संसार के दुःख-सुख समाप्त हो गए। परमधाम के अखण्ड सुख प्रदान किए।

Nijanand App

पचास हजार बाग किए खैरात, बरकत नुसखे भई सिफात।
हवेलियां जो थी वैरान, सो किया खड़ियां हुए मेहरबान।। २१ ।।

परमधाम की जमीन पचास हजार योजन की है जो मोमिनों को कुलजम सरूप की वाणी के नुस्खे से प्राप्त हुई। मोमिनों के अर्श दिल ही हवेलियां हैं। जो कुलजम सरूप की वाणी के बिना वीरान थीं। श्री प्राणनाथजी महाराज ने अपनी वाणी से पहचान कराकर इन मोमिनों को जागृत कर दिया।

ए जो बात कुराने कही, सो मैं जाहेर करी सही।
इनका बयान करे आलम, बिना फुरमाया करे जालम।। २२ ।।

श्री प्राणनाथजी कहते हैं कि कुरान के किस्से आखिर को होने वाली बातें हैं। मैंने तुमको बताई हैं। दुनियां वाले बातूनी अर्थों को बीती बातें कहते हैं और समाज के सामने हकीकत की पहचान करने में अड़चनें डालते हैं। ऐसा बड़ा जुल्म ढाते हैं।

तुम माएने ऊपर के यों लिए, किस्से कुरानके पेहेले हो गए।
जो जमाने हुए मनसूख, ए रोसनी तित क्यों डारो चूक।। २३ ।।

यह लोग कहते हैं कि यह कुरान के किस्से बीती बातें हैं जो पहले हो गई हैं, वह जमाना गुजर गया, रद्द हो गया है, इसलिए अब इस ज्ञान को समझने में क्यों डरते हो?

ए जो इमाम गजनवीका मजकूर, लिख्या आखिरत को होसी जहूर।
सो मजकूर कहें हो गया, जो जाहेर कयामत में कह्या।। २४ ।।

इमाम फकीर इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी हैं और गजनवी सुल्तान महाराजा छत्रसालजी हैं। इन दोनों स्वरूपों का किस्सा भविष्य में है ग्यारहवीं सदी में आएगा। कयामत के निशान जाहिर होंगे। इसको पढ़ने वाले लोग कहते हैं, यह बीती बात है।

उमी आप पढ़ें कुरान, सुनो जाहेरियों दिल के कान।
क़ाजी कजा पर आया आखिर, खोल दिल दीदे देखो नजर।। २५ ।।

यह अनपढ़ सुन्दरसाथ कुरान पढ़ते हैं और उसके छिपे रहस्यों को समझा रहे हैं, इसलिए जाहिरी मायने से भूले-भटके लोग दिल के कानों से सुनो और विचारो कि खुदा ने संसार में आने का जो वायदा किया था, वह श्री प्राणनाथजी बनकर साक्षात् पन्नाजी में विराजमान हैं, परन्तु उनके स्वरूप को जाहिरी आंख से न देखना। अन्दर की आंखों से देखो और पहचानो।

ल्याओ आकीन कहे छत्रसाल, असलू पाक हुए निहाल।। २६ ।।

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस स्वरूप को दिल की आंखों से पहचान कर जिनको ईमान और इश्क आएगा, वही सच्चे मोमिन हैं और उनको दुनियां से पाक हो गए समझना।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १०५ ।।

लिख्या माहें नामें नूर, जाए देखो महंमद का जहूर।
आरिफ कहावें मुसलमान, पावें नहीं हिरदा कुरान।। १ ।।

नूरनामे में मुहम्मद साहब की पहचान को देखो। मुसलमान अपने आपको कुरान का पढ़ा-लिखा कहते हैं, परन्तु कुरान के गुझ (गुप्त) अर्थों को नहीं समझते।

Nijanand App